CLASSMATE
Date :
Page :

आर्थिक प्रतियोगिता और अपराध
(Economic Competition and crime)

औद्योगीकरण के साथ-साथ उद्योग धन्धों में भी क्रांतिकारी विस्तार हुए हैं इसमें आर्थिक प्रतियोगिता भी अत्यधिक बढ़ गई है। आज प्रत्येक व्यक्ति समाज में सम्मानित पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है और यह चाहता है कि उसे किसी न किसी प्रकार से अधिक सम्पत्ति और सामाजिक स्थिति प्राप्त हो जाय। इसके फलस्वरूप आर्थिक क्षेत्र में प्रतियोगिता का आज बोलबाला है। प्रतियोगिता की प्रक्रिया का परिणाम हमेशा प्रगति और सुदृढ़ सामाजिक व्यवस्था नहीं होती है। अनेक बार सांस्कृतिक तत्वों की प्रतियोगिता प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष को बल देती है जो निश्चय ही अपराध को बढ़ा देती है। आर्थिक आधार पर इस तरह की प्रतियोगिता प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष आज की गतिशील समाज की एक विशेषता है। इस प्रतियोगिता में जो व्यक्ति हार जाते हैं उनमें हीनता की भावना उत्पन्न होने की सम्भावनाएं सदा ही रहती है। इस प्रकार की हीन भावना से पीड़ित व्यक्ति सदा ही यह प्रयत्न करता है कि व्यक्तित्व की उस कमी को किसी न किसी प्रकार पूरा करे और इसी प्रयत्न में वह गैर नैतिक और गैर-कानूनी कार्यों को कानूनी और नैतिक कार्यों के बीच अंतर नहीं कर पाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति वैध तरीकों से प्रतियोगिता में सफल नहीं हो पाता है तो वह अवैध तरीकों को अपनाना प्रारंभ कर देता है। इस स्थिति का एक प्रभाव आज बढ़ती हुई व्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता है।

प्रतिद्वन्द्विता का कटु रूप ही संघर्ष होता है जो केवल सैद्धान्तिक ही न रहकर हिंसात्मक कार्यों की ओर व्यक्ति को प्रभावित करता है।

भौतिकवाद की धारणाओं और मूल्यों के स्थापित हो जाने से आज के समाज में प्रतियोगिता का महत्व इतना अधिक बढ़ गया है कि इसका क्षेत्र अब केवल आर्थिक विषयों तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी इसका विस्तार हो चुका है। केवल इतना ही नहीं औद्योगीकरण के फलस्वरूप आर्थिक प्रतियोगिता का क्षेत्र भी अब व्यक्तिगत स्तर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न आर्थिक समितियों और संगठनों के बीच भी प्रतियोगिता की प्रक्रिया समान

CLASSMATE
Date :
Page :

रूप से बढ़ती चली जा रही है।

इसलिए आज अपराध केवल व्यक्तिगत आधार पर ही नहीं बल्कि सामूहिक आधार पर भी घटित होता है। व्यापार व उद्योग के क्षेत्र में दुकान की नकल, मिलावट, आमदनी तथा विक्रीकर की चोरी आदि सामान्य अपराध अत्यधिक बढ़ते ही जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रतियोगिता व्यक्तिगत ऋणों तथा क्षमताओं पर अधिक बल देती है, जिसके फलस्वरूप व्यक्तिवाद का विकास होता है। यह व्यक्तिवाद स्वयं ही नाना प्रकार के अपराधों को जन्म देता है। परन्तु इस सम्बन्ध में यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि प्रतियोगिता का जन्म या स्वरूप समाज व संस्कृति के द्वारा निर्धारित होता है। इसलिए प्रतियोगिता को ही अपराध का कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं माना जाता है। वास्तव में प्रतियोगिता के फलस्वरूप जिन परिस्थितियों का उद्भव होता है उनके फलस्वरूप व्यक्ति अपराध करता है।

समाप्त